Page No.
Date

B.A. (Hons) Part I (1)
Philosophy Paper II
Topic दर्शन तथा विज्ञान के बीच संबंध

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of. Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

दर्शनशास्त्र समग्र विश्व तथा जीवन का व्यापक अध्ययन करने का प्रयास करता है इसलिए कहा गया है कि - Philosophy is the interpretation of life and experience as whole. विज्ञान भी विश्व और जीवन के स्वरूप को समझने की चेष्टा अपने-अपने ढंग से करता है लेकिन विज्ञान की विशेषता यह है कि वह विश्व के अलग-अलग विभागों तथा मानव जीवन के अलग-अलग पहलुओं का अध्ययन अलग-अलग रूप में करता है इसलिए भौतिक विज्ञान, रासायन विज्ञान, जीव विज्ञान इत्यादि अनेक प्रकार के विज्ञान हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है, कि जहाँ दर्शन समग्र विश्व का सामान्य अध्ययन है वहाँ विज्ञान विश्व के किसी एक खास विभाग का विशिष्ट अध्ययन है।

फिर विज्ञान कुछ बातों को स्वयंसिद्ध रूप में सत्य मानकर आगे बढ़ता है लेकिन दर्शन कुछ भी मानकर नहीं चलता है। दर्शन उन मान्यताओं का भी सूक्ष्म विवेचन करता है जिन्हें विज्ञान बिना किसी सन्देह तथा विवेचन के मान लेता है। मनुष्य के ज्ञान प्राप्त करने की कोई सीमा है या नहीं, इस प्रश्न पर कोई भी विज्ञान विचार नहीं करता है परन्तु दर्शन इन सबों की छान-बीन करता है तथा उनके मौलिक स्वरूप में जानने की चेष्टा करता है, इसलिए कहा जाता है कि विज्ञान की पूर्व मान्यताएँ दर्शन की समस्याएँ हैं।

फिर विज्ञान जो कुछ हमारे साधारण अनुभव में है और जिसे हम घटना (Phenomenon) कह सकते हैं उसी तक अपने ध्यान को सीमित रखता है और उसी का एक बौद्धिक तथा तार्किक व्याख्यान प्रस्तुत करता है परन्तु दर्शन संघटित से और गहरा जाता है और आधारभूत सत्य या वास्तविकता को पता लगाना

चाहता है इसके लिए विज्ञान अन्तःप्रज्ञा (Intuition) का सहारा लेता है।

परन्तु इन बातों से हमें यह नहीं समझना चाहिए कि दर्शन और विज्ञान में केवल भेद ही है बल्कि वास्तविकता तो यह है कि दोनों के बीच निकटता का भी संबंध है दर्शन का स्वरूप प्रारम्भ से लेकर आजतक परिकल्पनात्मक (Speculative) रहा है, उसके पास प्रयोग करने का कोई साधन नहीं है। विज्ञान प्रयोगात्मक (Experimental) होता है परन्तु दर्शन ने अपने परिकल्पनात्मक स्वरूप के बावजूद विज्ञान को कुछ ऐसी पूर्वकल्पनाएँ प्रदान की है जिनकी प्रयोगिक जाँच कर विज्ञान ने महत्वपूर्ण सिद्धांतों को जन्म दिया तथा विशाल उपलब्धियाँ हासिल की। उदाहरण के लिए भौतिक परमाणुवाद जो बाद में विज्ञान का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त बना सदियों की दार्शनिक परिकल्पना का ही प्रतिफल है। इसका हमलोग यह देखते हैं कि सभी विज्ञान पहले दर्शन के अन्तर्गत ही आते थे परन्तु जैसे-जैसे कुछ निश्चित निष्कर्ष मिलते गये और प्रयोगिक जाँच पर खरे उतरे वैसे-वैसे अलग-अलग विज्ञान का जन्म हुआ।